ISSN : 2229-5550

नाट्यम् 85

जुलाई-दिसम्बर, 2018

रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की त्रैमासिक शोधपत्रिका

प्रधान संपादक
राधावल्लभ त्रिपाठी

संपादक
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

प्रबन्ध संपादक
सञ्जय कुमार

संपादक मण्डल
नौनिहाल गौतम
रामहेत गौतम
शशिकुमार सिंह
किरण आर्या

प्रकाशक
नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग
डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

नाट्यम्
रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की त्रैमासिक शोध पत्रिका,
अंक : 85, जुलाई-दिसम्बर, 2018
ISSN : 2229-5550
UGC Approved Journal Sr. No. 41002
नाट्य परिषद् (पंजीकरण क्र. 100066)
संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
दूरभाष-फैक्स (कार्यालय) 07582-264366 पिन-470 003

Natyam : A Quarterly Journal of theatre and aesthetics
published by Natya Parisad. Deptt. of Sanskrit,
Doctor Harisingh Gour University, Sagar,
Madhya Pradesh-Pin-470 003. India.
Phone-Fax (off.) : 07582-264366

सदस्यता शुल्क :
प्रत्येक अंक - 25/- रु., वार्षिक - 100/- रु.
आजीवन (प्रति व्यक्ति) - 1000/- रु.
आजीवन (प्रति संस्था) - 5000/- रु.

यह शुल्क मनीआर्डर, चेक या नगद दिया जा सकता है
जो नाट्य परिषद् सागर के नाम देय होगा।

पत्रव्यवहार :
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003
e-mail : sanskritsagar1946@gmail.com
© सर्वाधिकार सुरक्षित

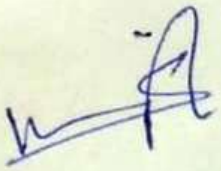

मुद्रण : अजय जैन, **अमन प्रकाशन** नमक मंडी,
कटरा, सागर (म.प्र.) मो. 9826434225

नाट्यम् में प्रकाशित नाटकों के अनुवादों/रूपान्तरों या किसी भी अन्य सामग्री की किसी भी रूप में प्रस्तुति के लिए *नाट्य परिषद्* से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।
प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति अथवा विचारों से *नाट्य परिषद्*, संपादक या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सूचना - आजीवन ग्राहकों को डाक व्यय 250 रु. (दो सौ पचास रूपये मात्र) पर नाट्यम् के उपलब्ध पुराने अंक भी निःशुल्क देय हैं।

अनुक्रम

1. राजशेखर के बालरामायणम् नाटक में अद्‌भुत रस समीक्षण — 9
   डॉ. बाबूलाल मीना

2. कविराज राजशेखर द्वारा प्रतिपादित कविसमय: सिद्धात एवं अनुप्रयोग ('विद्धशालभंजिका' नाटिका के विशेष सन्दर्भ में) — 23
   विनिता यादव

3. प्रतिमानाटकम् में सीता — 29
   डॉ. शशिकुमार सिंह

4. अभिज्ञानशाकुन्तलनाटक में शकुन्तला का सामाजिकसामर्थ्य — 36
   डॉ. सुमन कुमार झा

5. महाभारत आधारित रूपकों में सामाजिक समस्याएँ — 46
   जहाँआरा

6. नाटक में नायक की अवधारणा : स्वरुप एवं अनुप्रयोग — 43
   नन्दिता आर्या

7. नाट्यशास्त्रीय परम्परा में रस तत्त्व — 66
   पूनम यादव

8. 'कस्य निमित्तम्' नाटक में जन-कल्याण की भावना — 81
   अरुण कुमार निषाद

3

प्रतिमानाटकम् में सीता

डा. शशिकुमार सिंह

स्त्री के प्रति सद्भाव का वर्णन तथा स्त्री के महनीय चरित्र का यशोगान संस्कृत साहित्य की प्रमुख विशेषता रही है। स्त्री के पुत्री, माँ, पत्नी, मित्र आदि विविध रूपों के विस्तृत विवेचन से संस्कृत वाङ्मय की प्रमुख विशेषता रही है । स्मृति ग्रंथों में स्त्री को पूजनीया बताया गया है।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"[1]

महाकवि भवभूति ने स्त्री के पत्नी के रूप को घर की लक्ष्मी कहा है

'इयं गेहे लक्ष्मी'[2]

महाभारत में माँ के रूप में स्त्री को स्वर्ग से भी अधिक श्रेयस्कर कहा गया है -

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'[3]

संस्कृत के सुप्रसिद्ध नाटककार भास ने भी अपने नाटकों में स्त्री पात्र की भूमिका को विशेष महत्व के साथ अभिवर्णित किया है तथा समाज में उसके महत्व को उदारतापूर्वक रेखांकित किया है।

कवि भास कृत कुल तेरह नाटक हैं जो संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि है। प्रतिमानाटकम् भास की रामकथाश्रित महत्वपूर्ण कृति है सात अंको में विभाजित इस नाटक में राम का सीता और लक्ष्मण के साथ वनगमन प्रमुख घटना है जिसका अवबोध प्रतिमागृह से सम्बन्धित है। कवि प्रवर भास ने सुन्दर, सुगठित और सुनियोजित वस्तु संघटना वाले प्रतिमानाटकम् नाटक में पुरूष पात्रों रामादि के साथ-साथ स्त्री पात्रों कौशल्या, कैकेयी एवं सीता आदि के चरित्र को प्रमुखता प्रतिष्ठा के साथ उपस्थापित किया है।